SHRI RAGHU RAMAIAH: He said that the Maharashtra Government is demolishing the temple and the idols there. In this connection, he said, he has moved the Maharashtra Vidhan Sabha and so on. That is his slogan. (*Interruption*)

The other case is this. This person is called Shri Raj Kumar Jain. His grievance is this. He passed his B. A. (Hons.) Examination in History. He appeared for M. A. (History) of Delhi University. In the final examination he wrote his papers in Hindi. When the result was declared, his name was not in the list of successful candidates. He protested against this to the Vice-Chancellor of Delhi University and also, he along with his supporters, demonstrated outside the office of the Vice-Chancellor and as a result, he was expelled from the Delhi University. Today, he raised slogans that his answer book may be examined: मेरी कापी जांची जाय He was removed from the Public Gallery by the Watch and Ward Staff.

MR. CHAIRMAN: The question is:. . .

SHRI CHENGALRAYA NAIDU (Chittoor): I wish to move an amendment. I have got right to move an amendment. (*Interruption*).

सभापति महोदय: इसमें स्पीच वगैरह नहीं होती । खाली वोट ले लिया जाता है ।

The question is:

"This House resolves that the persons calling themselves (1) Swami Yogeshwara Nand Giri and (2) Shri Raj Kumar Jain who raised slogans from the Visitors' Gallery at 12.45 P.M. today and whom the Watch and Ward Officer took into custody immediately have committed a grave offence and are guilty of the contempt of this House.

This House further resolves that they be sentenced to simple imprisonment till 6 P.M. on Tuesday, the 1st September, 1970 and sent to Tihar Jail, Delhi."

The motion was adopted.

16.54 hrs.

RELEASE OF MEMBER

(Shri Jharkhande Rai)

MR. CHAIRMAN: I have to inform the House that the Speaker has received the following wireless message, dated the 31st August, 1970, from the Sub-Divisional Judge, Barabanki:—

Shri Jharkhande Rai, Member, Lok Sabha, released today after serving seven days' sentence."

16.55 hrs.

MOTIONS RE: REPORTS OF COMMISSIONER FOR SCHEDULED CASTES AND SCHEDULED TRIBES AND COMMITTEE ON UNTOUCHABILITY—Contd.

MR. CHAIRMAN: The House will now take up further consideration of the following motion moved by Shri P. Govinda Menon on the 20th May, 1970, namely:—

"That this House takes note of the sixteenth, Seventeenth and Eighteenth Reports of the Commissioner for Scheduled Castes and Scheduled Tribes for the years 1966-67, 1967-68 and 1968-69, laid on the Table of the House on the 24th April, 1968, 15th May, 1969 and 30th March, 1970, respectively."

The House will also take up further consideration of the following motion moved by Shri Suraj Bhan on the 20th May, 1970, namely:—

"That the Report of the Committee on Untouchability, Economic and Educational Development of the Scheduled Castes (Part I-V) along with the connected documents, laid on the Table of the House on the 10th April, 1969, be taken into consideration."

14 घंटे इसमें खत्म हो चुके हैं। कुल 20 घंटे इसके लिए निर्धारित थे ।

श्री जनेश्वर मिश्र (फूलपुर) : सभापति जी, पिछले दिन जब हरिजन और आदिवासी लोगों के सवाल पर बहस चल रही थी तो ज्यादातर दो तरह की भूख की चर्चा की गई। एक भूख तो है शरीर की और दूसरी भूख है मनकी। ज्यादातर हरिजन सदस्यों ने जोर दिया कि हमारी मन वाली भूख भरने के लिए मत मौका दो लेकिन शरीर की भूख तो भरने ही दो। उनकी जानकारी के लिए हम कहेंगे कि यह दोनों भूख एक दूसरे से मिली रहती हैं। अगर तन जलील हुआ तो मन भी जलील होता है। अगर पेट की भूख के कारण या मन की भूख के कारण मन भी जलील हुआ तो शरीर को भी जलील होना पड़ता है। यह एक दूसरे के रिश्तेदार होते हैं जलालत का जहां तक सवाल है। पिछले हजार साल से या उससे भी ज्यादा दिनों से इस देश में शरीर का मालिक या पेट का मालिक तो बनिया रहा है और इस देश के मन का मालिक बाभन रहा है और दोनों की सांठ-गांठ भी रही है। हरिजन और आदिवासी जो शोषण का शिकार हुए इन दोनों की सांठ-गांठ से हुए। बामन और बनिया का रिश्ता भी एक जमाने से चला आ रहा है। रिश्ता चलता है कि मिश्राइन तो बनिया का हुक्का चढ़ाती है...(व्यवधान)...होता यह रहा है और कहते भी हैं कि मिश्राइन या बामनी तो सेठ जी को चिलम चढ़ाती रहीं और सेठानी पंडित जी का पैर दबाती रहीं और यह मधुर रिश्ता रहा। इन दोनों ने रिश्ता बनाकर समाज को लूटा। तो यह तो समाज की लूट का सिलसिला चलता रहा। इसके बाद इनके 20-22 साल के अपने जमाने में इस लूट के साथ समाज को कोढ़ का एक रोग लग गया और वह कोढ़ है भूख, भ्रष्टाचार और भोग का। यह तीन कोढ़े लगतार काम करते रहे। तो हम आप से कहेंगे कि हरिजन और आदिवासियों के सवाल को हल करते समय इस बात को जरूर सोचिए कि हजार साल से देश को जो जाति-प्रथा का रोग लगा हुआ है इसके साथ-साथ 20-22 साल से जो भूख, भ्रष्टाचार और भोग का कोढ़ लगा है दोनों को कैसे काटा जाय? जब यहां शिवनारायण जी भाषण दे रहे थे तो उन्होंने कहा कि हरिजन भीख नहीं मांगते। मैं उनकी याददाश्त के लिए बताना चाहता हूं बहुत से हरिजन हैं, हरिजन का मतलब पिछड़े लोग, उनमें एक डोम जाति होती है, उसके घर में कभी खाना नहीं पकता। किसी भी डोम के घर में खाना नहीं पकता। वह 9 बजे रात को निकलता है, बामन, बनिया, कुर्मी, हिन्दू, मुसलमान, सबके घर घर के आगे जाकर गोहार लगाता है कि टुकड़ा मिले। कोई जूठी रोटी, कोई चावल, कोई सब्जी फेंक दिया करते हैं और उसी को वह खा लिया करते हैं। और भी हैं। शिवनारायण जी के इलाके में उत्तर-प्रदेश के पूर्वी इलाके में और आपके बिहार में भी बहुत से हरिजन खलिहानों पर बैठे रहते हैं। बैल जब खलिहानों में गेहूं को पैर से रौंदते हैं तो गेहूं खाते भी हैं। उनके गोबर से गेहूं निकलता है। हरिजन वह गौबर उठाने के लिए खलिहान के बाहर बैठे रहते हैं और कभी-कभी उसके लिए लाठी भी उनमें चल जाती है। इस तरह करीब एक करोड़ हरिजन होंगे जो गौबर इकट्ठा करते हैं।...

सभापति महोदय: अब आप अगले दिन अपना भाषण जारी रखिएगा।

---

17 hrs.

DISCUSSION RE: INTERIM RELIEF TO CENTRAL GOVERNMENT EMPLOYEES—*Contd.*

MR. CHAIRMAN: Further discussion on the growing discontent amongst the Central Government employees throughout the country because of abnormal delay in payment of interim relief.

SHRI UMANATH (Pudukkottai): Since all their gains in the past two decades have been wiped off by rising prices and in view